<u>विषय- हिंदी</u>
<u>बी.ए.द्वितीय वर्ष</u>

जयशंकर प्रसाद का भाव पक्ष।

1-मानव सौंदर्य

2-प्रेम का चित्रण

3-देश प्रेम की भावना

4-प्रकृति चित्रण

हिंदी साहित्य में प्रसाद जी का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है हिंदी जगत में प्रसाद से टक्कर लेने वाले विद्वान बहुत कम दिखाई देते हैं प्रसाद ने सूर ,विद्यापति ,मीरा आदि की गीतों को नए सिरे से पुनः प्रारंभ किया।उन्नीसवीं शताब्दी में निबंध कहानी उपन्यास और नाटकों की प्रमुखता रही प्रसाद जैसे मनीषी कलाकार ने सभी क्षेत्रों में अपनी लेखनी का कौशल दिखाया है उनका मानना है कि भाव काव्य की अनुभूति एवं ह्रदय पक्ष से संबंध रखता है।

छायावादी कविता में विद्रोह का तीव्र स्वर भरा हुआ था जो अपनी रहस्यमयी भावनाओं लक्षणिक एवं प्रतीकात्मक पदावलियों चित्रमयी भाषा एवं मधुमयी कल्पना आदि के कारण एक नवीन छाया के रूप में दिखाई देती थी। इसमें नैतिकता की भी कहीं कहीं अवहेलना कीगई थी फिर भी इसमें श्रृंगार के अति इंद्रिय एवं मानसिक पक्ष की प्रबलता थी। सांप्रदायिक रूढ़ियों से ग्रस्त धार्मिकताका तिरस्कार करके विश्वबंधुत्व, मानवता, वसुधैव कुटुंबकम् आदि की भावनाओं को ही अधिक महत्व दिया गया था।

प्रसाद ने विश्व के प्रत्येक पक्ष का सौंदर्य देखने में रुचि दिखाई,उनकी कामायनी में ऐसे ही व्यापक सौंदर्य की उपासना परिलक्षित होती है। उन्हें संवेग सौंदर्यमयी चंचल कृतियां रहस्य बनकर नाचती हुई प्रतीत होती हैं, सभी स्थानों पर मधुरिमा में मौन रूप से एक सोया हुआ महान संदेश सुनाई पड़ता है और तारागण, चंद्र ज्योत्स्ना, रजनी उषा स्वरुप ही उन्हें प्रलय काल में भी तरल तिमिर एवं प्रलय पवन आलिंगन करते प्रतीत होते हैं।

प्रसाद ने प्राकृतिक रूप सौन्दर्य के सजीव चित्र अंकित किये हैं, जिनमें व्यवस्थित क्रम पूर्णता एवं संक्षिप्तता के दर्शन होते हैं इन चित्रों की संक्षिप्त शैली इतनी मार्मिक है कि थोड़े विवरण से ही रूप सौन्दर्य का प्रभावशाली चित्र पाठकों के मानस पटल पर उतर

आता है और सुषमा का साक्षात्कार करता हुआ प्रत्येक सहृदय पाठक आनंद विभोर हो उठता है।

प्रसाद जी में प्रेम तत्व के नीरुपण मैं जहां रीति कालीन अतिशयता श्रृंगारिकता का अभाव है वही भक्त कवियों के अलौकिक प्रेम और श्रृंगार से अछूता है, वह नैसर्गिक स्वच्छ और अपने में पूर्ण है। प्रेम में जो अपूर्व उन्माद लालसा कंपन, आत्मविस्मृति, करुण वेदना अहलाद,आदि की भावना है उसी के आधार पर प्रसाद के काव्य की रचना की गई है।

प्रसाद ने मानव प्रेम को बड़ी सहजता के साथ अपनाया है, वह मानवता की अनन्या पुजारी हैं समस्त मानवकल्याण की कामना करते हुए विश्व बंधुत्व की भावना से ओत प्रोत होकर सच्ची मानवता के प्रेम को अपनी कविताओं में चित्रित करते हैं इतना ही नहीं प्रसाद ने मानव को भौतिकता की पिच्छल शिलासुपर उठाकर आध्यात्मिकता के गौरव शिखर पर चढ़ने के लिए प्रेरित किया है साथ ही मानव प्रेम एवं विश्व बंधुत्व की उच्च भावना का निरुपण करके मानवता की गुरुता ,गंभीरता एवं श्रेष्ठता को दर्शाया है।

डॉ0 वन्दना
असिस्टेन्ट प्रोफेसर–हिन्दी